International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 23-04-2026, Accepted: 24-05-2026, Published: 08-06-2026
Volume 12, Issue 2, 2026, Page No. 164-166

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन

सौरभ कुमार शर्मा[1], ओमप्रकाश द्विवेदी[2]
[1] शोधार्थी, हिंदी विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय रीवा, मध्यप्रदेश, भारत
[2] प्रोफ़ेसर, प्राचार्य, यमुना प्रसाद शास्त्री महाविद्यालय सिरमौर, रीवा, मध्यप्रदेश, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.2.12137

सारांश
इस प्रस्तुत शोध पत्र हिंदी के सुप्रसिद्ध नाटककार सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का रंगमंचीय दृष्टिकोण से विश्लेषण करता है। सुरेंद्र वर्मा ने अपने नाटकों में ऐतिहासिक, मिथकीय एवं समकालीन विषयों को रंगमंच की तकनीक से जोड़कर हिंदी नाट्य साहित्य को एक नई दिशा और उर्जा प्रदान की है। इस शोध में उनके प्रमुख नाटकों–'आठवाँ सर्ग', 'द्रौपदी', 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक', 'एक दूनी एक',तथा 'रति का कंगन' आदि का रंगमंचीय संरचना, संवाद–शिल्प, प्रकाश–व्यवस्था, पात्र–निर्माण एवं नाट्य–प्रदर्शन की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। शोध में यह स्पष्ट होता है कि सुरेंद्र वर्मा के नाटक केवल पाठ्य–रूप में नहीं, बल्कि रंगमंच पर प्रस्तुति की दृष्टि से भी अत्यधिक प्रभावशाली एवं सशक्त हैं।

मूल शब्दः रंगमंच, सुरेंद्र वर्मा, हिंदी नाटक, नाट्य–शिल्प, मंचन, पात्र–चरित्र, संवाद–कला, नाट्य–संरचना, प्रकाश–व्यवस्था, तुलनात्मक अध्ययन

हिंदी नाट्य–साहित्य का इतिहास जितना समृद्ध है, उतना ही उसका रंगमंचीय विकास भी उल्लेखनीय रहा है। भारतेंदु हरिश्चंद्र से लेकर मोहन राकेश, धर्मवीर भारती और विजय तेंदुलकर तक की नाट्य–परंपरा में सुरेंद्र वर्मा का नाम विशेष महत्त्व रखता है। उन्होंने हिंदी रंगमंच को एक नई शैली, नई संवेदना और नया शिल्प प्रदान किया। उनके नाटक न केवल साहित्यिक दृष्टि से श्रेष्ठ हैं, अपितु रंगमंच पर उनकी प्रभावशाली प्रस्तुति भी उन्हें विशेष बनाती है।.

सुरेंद्र वर्मा का जन्म 1941 में हुआ। उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से शिक्षा प्राप्त की और हिंदी अकादमी, दिल्ली के सचिव पद पर भी कार्य किया। उनके नाटकों में भारतीय मिथक, इतिहास तथा मनोवैज्ञानिक चरित्र–चित्रण का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। रंगमंच की दृष्टि से उनके नाटक जटिल परंतु अत्यंत प्रभावशाली हैं, जो दर्शक को अपने साथ बाँधे रखते हैं।

प्रस्तुत शोध पत्र में सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का रंगमंचीय अध्ययन करते हुए यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार उन्होंने अपने नाटकों में मंच–विधान, प्रकाश–प्रबंधन, पात्र–निर्माण एवं संवाद–शिल्प का उपयोग कर रंगमंच को एक नई ऊँचाई प्रदान की।

विषय की प्रासंगिकता

समकालीन हिंदी साहित्य में नाट्य–विधा की उपेक्षा एक चिंतनीय विषय है। जहाँ एक ओर उपन्यास और कविता के क्षेत्र में व्यापक शोध हुए हैं, वहीं नाट्य–साहित्य–विशेषतः उसके रंगमंचीय पक्ष पर–अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। ऐसे में सुरेंद्र वर्मा जैसे सशक्त नाटककार का रंगमंचीय अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक हो जाता है।

आज जब हिंदी रंगमंच वैश्वीकरण और डिजिटल माध्यमों की चुनौतियों से जूझ रहा है, ऐसे समय में सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की रंगमंचीय विशेषताओं का अध्ययन हमें यह समझने में सहायक होगा कि परंपरागत एवं आधुनिक रंगमंचीय तत्त्वों का संयोजन किस प्रकार किया जाए। उनके नाटक हिंदी रंगमंच के लिए एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

इसके अतिरिक्त, उनके नाटकों में स्त्री–चेतना, मनोवैज्ञानिक द्वंद्व, राजनीतिक व्यंग्य एवं सामाजिक यथार्थ के जो आयाम हैं, वे आज के समाज में भी उतने ही प्रासंगिक हैं। अतः इस शोध का महत्त्व केवल साहित्यिक नहीं, बल्कि सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यधिक है।

शोध पत्र में प्रयुक्त शोध प्रविधि

इस प्रस्तुत शोध में मुख्यतः निम्नलिखित शोध प्रविधियों का उपयोग किया गया है

1. वर्णनात्मक प्रविधि (Descriptive Method)

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की कथावस्तु, पात्र–संरचना, संवाद–शैली एवं मंच–व्यवस्था का विस्तृत वर्णन एवं विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके अंतर्गत प्रत्येक नाटक की नाट्य–संरचना का व्यवस्थित अध्ययन किया गया।

2. तुलनात्मक प्रविधि (Comparative Method)

विभिन्न नाटकों के मध्य तुलना करने तथा सुरेंद्र वर्मा के नाटकों की अन्य समकालीन नाटककारों की रचनाओं से तुलना करने के लिए तुलनात्मक प्रविधि अपनाई गई है। इससे उनकी विशिष्टताओं और मौलिकताओं को रेखांकित करना संभव हुआ।

3. ऐतिहासिक प्रविधि (Historical Method)

हिंदी नाट्य–परंपरा के ऐतिहासिक संदर्भ में सुरेंद्र वर्मा के योगदान को समझने के लिए ऐतिहासिक प्रविधि का उपयोग किया गया। इससे उनके नाटकों को नाट्य–परंपरा की एक कड़ी के रूप में समझने में सहायता मिली।

4. विश्लेषणात्मक प्रविधि (Analytical Method)

नाटकों के रंगमंचीय पक्ष—प्रकाश, ध्वनि, मंच–सज्जा, अभिनय–निर्देश—के गहन विश्लेषण के लिए विश्लेषणात्मक प्रविधि अपनाई गई। नाटकों के मूल पाठ के साथ–साथ उनके विभिन्न मंचन के आलोचनात्मक समीक्षाओं का भी अध्ययन किया गया।

5. साक्ष्य–संग्रह (Data Collection)

प्राथमिक स्रोत के रूप में सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के प्रकाशित संस्करणों का उपयोग किया गया। द्वितीयक स्रोत के रूप में

शोध–पत्रिकाओं, समीक्षा–ग्रंथों, नाट्य–समीक्षाओं एवं रंगमंच पर केंद्रित अध्ययन–सामग्री का उपयोग किया गयज्ञं

शोध पत्र का तुलनात्मक अध्ययन

सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का रंगमंचीय तुलनात्मक अध्ययन उनकी शैलीगत विशिष्टता को और अधिक उजागर करता है। यहाँ उनके प्रमुख नाटकों के विभिन्न रंगमंचीय पक्षों का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है

1. 'आठवाँ सर्ग' और 'द्रौपदी' का तुलनात्मक रंगमंचीय विश्लेषण

'आठवाँ सर्ग' (1976) में सुरेंद्र वर्मा ने कालिदास के जीवन के एक काल्पनिक अध्याय को आधार बनाकर एक ऐसा नाट्य–संसार रचा है जो मंच पर अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत होता है। इस नाटक में प्रकाश–व्यवस्था का विशेष महत्त्व है—कालिदास की कवि–चेतना और उसके आंतरिक द्वंद्व को व्यक्त करने के लिए प्रकाश का सांकेतिक उपयोग किया गया है। इसके विपरीत 'द्रौपदी' (1989) में मिथकीय पात्र द्रौपदी के मनोवैज्ञानिक स्तरों को उजागर करने के लिए न्यूनतम मंच–सज्जा और अधिकतम संवाद–प्रभाव का उपयोग किया गया है। इस नाटक की मंच–प्रस्तुति में एकाकी प्रकाश–वृत्त का प्रयोग द्रौपदी की एकाकी संघर्षशीलता को मार्मिक रूप से व्यक्त करता है।

2. 'सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक' का रंगमंचीय वैशिष्ट्य

यह नाटक (1975) हिंदी रंगमंच में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर है। इसकी प्रस्तुति में समय की सापेक्षता का नाट्य–प्रयोग अत्यंत मौलिक है। 'सूर्य की अंतिम किरण' और 'सूर्य की पहली किरण' के बीच एक पूरी रात की नाट्य–यात्रा एकल स्थान पर घटित होती है—यह एकता–सिद्धांत (Unity of Place) का सुंदर उपयोग है। मंच पर समय का प्रवाह प्रकाश के क्रमिक परिवर्तन द्वारा सूचित किया जाता है।

'एक दूनी एक' (1993) में सुरेंद्र वर्मा की व्यंग्यात्मक प्रतिभा रंगमंच पर और उभरकर आती है। यहाँ वे न्यूनतम पात्रों के साथ अधिकतम नाट्य–प्रभाव उत्पन्न करते हैं। इस नाटक में प्रहसन–शैली और त्रासदी का संमिश्रण रंगमंच पर देखने योग्य है। दोनों नाटकों की तुलना करने पर यह स्पष्ट होता है कि सुरेंद्र वर्मा अपनी प्रत्येक रचना में रंगमंच की तकनीक को नए सिरे से परिभाषित करते हैं।

3. सुरेंद्र वर्मा बनाम मोहन राकेश: रंगमंचीय तुलना

मोहन राकेश के नाटकों–'आषाढ़ का एक दिन', 'लहरों के राजहंस'–में जहाँ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद और सामाजिक अनुभव को प्रमुखता दी गई है, वहीं सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में बौद्धिक तर्क, भाषायी सौंदर्य और दार्शनिक चिंतन अधिक प्रभावी हैं। रंगमंचीय दृष्टि से मोहन राकेश के नाटक यथार्थवादी मंच–सज्जा की माँग करते हैं जबकि सुरेंद्र वर्मा के नाटक प्रतीकात्मक और न्यूनतम मंच–सज्जा में भी अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किए जा सकते हैं।

4. संवाद–शिल्प का तुलनात्मक विश्लेषण

सुरेंद्र वर्मा के संवाद में दो विशेषताएँ प्रमुख हैं—प्रथम, भाषायी संपदा और काव्यात्मकता; द्वितीय, दार्शनिक घनत्व। जहाँ विजय तेंदुलकर के संवाद तीखे और सामाजिक चोट करने वाले हैं, वहाँ सुरेंद्र वर्मा के संवाद में काव्य की मधुरता और तर्क की धार एक साथ मिलती है। रंगमंच पर यह संवाद–शैली अभिनेताओं के लिए चुनौतीपूर्ण है—इसमें भाषा की लय और उच्चारण–स्वर पर विशेष ध्यान देना आवश्यक होता है।

5. स्त्री–पात्रों का रंगमंचीय निरूपण

'द्रौपदी', एवं 'रति का कंगन' में सुरेंद्र वर्मा के स्त्री–पात्र रंगमंच पर असाधारण रूप से सशक्त और आकर्षक हैं। ये पात्र परंपरागत छवियों को तोड़कर नारी की स्वायत्त चेतना को व्यक्त करते हैं। रंगमंचीय दृष्टि से ये पात्र अभिनेत्रियों को पूरी अभिव्यक्ति का अवसर देते हैं–शरीर भाषा, मुखभाव और संवाद–अदायगी तीनों स्तरों पर ये पात्र अत्यंत चुनौतीपूर्ण और प्रभावशाली रहे हैं।

शोध पत्र का निष्कर्ष

इस शोध पत्र की विवेचना के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त होते हैं

प्रथम निष्कर्ष यह है कि सुरेंद्र वर्मा के नाटक रंगमंचीय दृष्टि से अत्यंत परिपक्व एवं व्यावहारिक हैं। उन्होंने अपने नाटकों में मंच के भौतिक आयामों का सचेत उपयोग किया है। उनके नाट्य–निर्देशों में भी यह रंगमंचीय संवेदनशीलता स्पष्ट परिलक्षित होती है।

द्वितीय निष्कर्ष यह है कि उनके नाटकों में प्रकाश–व्यवस्था महज तकनीकी उपकरण न होकर नाटक के भावात्मक और दार्शनिक आयामों को व्यक्त करने का माध्यम बनती है। 'आठवाँ सर्ग' और 'सूर्य की अंतिम किरण' में यह विशेषता सबसे प्रखर रूप में दिखाई देती है।

तृतीय निष्कर्ष यह है कि उनके नाटकों में संवाद–शिल्प की काव्यात्मकता रंगमंच पर एक विशेष श्रव्य अनुभव प्रदान करती है, जो दर्शक–श्रोता को साहित्यिक और नाट्य—दोनों आनंद एक साथ देती है। यह उनकी सबसे बड़ी रंगमंचीय उपलब्धि है।

चतुर्थ निष्कर्ष यह है कि सुरेंद्र वर्मा के नाटक न्यूनतम मंच–साधनों से भी अत्यधिक प्रभावशाली प्रस्तुति संभव बनाते हैं, जो उन्हें सामुदायिक और छोटे रंगमंचों के लिए भी उपयुक्त बनाता है।

पंचम एवं अंतिम निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि सुरेंद्र वर्मा ने हिंदी नाट्य–साहित्य में रंगमंच और पाठ के बीच की दूरी को पाटने का सफल प्रयास किया है। उनके नाटक पढ़ने में जितने रोचक हैं, मंच पर उतने ही–बल्कि उससे भी अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं।

भविष्य के लिए सुझाव

इस शोध के आधार पर भविष्य के शोधार्थियों एवं रंगमंच से जुड़े विद्वानों के लिए निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत हैं

पहला सुझाव यह है कि सुरेंद्र वर्मा के नाटकों के विभिन्न मंचन–देश–विदेश में हुई प्रस्तुतियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए। इससे एक ही नाटक की विभिन्न रंगमंचीय व्याख्याओं को समझना संभव होगा।

दूसरा सुझाव यह है कि उनके नाटकों को पाठ्यक्रम में शामिल करते समय केवल साहित्यिक पक्ष पर नहीं, बल्कि रंगमंचीय पक्ष पर भी समान ध्यान दिया जाए। विश्वविद्यालयों में उनके नाटकों की प्रयोगशाला–प्रस्तुतियाँ आयोजित की जानी चाहिए।

तीसरा सुझाव यह है कि सुरेंद्र वर्मा के नाटकों का अनुवाद और उनकी प्रस्तुति अन्य भारतीय भाषाओं में हो, ताकि उनकी रंगमंचीय विशेषताओं की अंतर–सांस्कृतिक प्रासंगिकता का आकलन किया जा सके।

चौथा सुझाव यह है कि डिजिटल आर्काइव के माध्यम से उनके नाटकों की ऐतिहासिक प्रस्तुतियों को सुरक्षित किया जाए, जिससे आने वाली पीढ़ियों के रंगमंचीय शोध के लिए प्रामाणिक सामग्री उपलब्ध हो सके।

पाँचवाँ और अंतिम सुझाव यह है कि आधुनिक रंगमंचीय तकनीक–जैसे प्रोजेक्शन मैपिंग, डिजिटल ध्वनि–संयोजन–का उपयोग करते हुए उनके नाटकों की नव–व्याख्यात्मक प्रस्तुतियाँ आयोजित की जाएँ और उनका शैक्षणिक मूल्यांकन किया जाए।

संदर्भ

1. वर्मा, सुरेंद्र (1975). सूर्य की अंतिम किरण से सूर्य की पहली किरण तक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. वर्मा, सुरेंद्र (1976). आठवाँ सर्ग. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. वर्मा, सुरेंद्र (1989). द्रौपदी. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
4. वर्मा, सुरेंद्र (1993). एक दूनी एक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. वर्मा, सुरेंद्र (1998). रति का कंगन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
6. द्वितीयक स्रोत (आलोचना एवं शोध–ग्रंथ)
7. अग्रवाल, रामचंद्र (2001). हिंदी नाटक का रंगमंचीय विकास. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. गुप्त, नेमिचंद्र (2005). समकालीन हिंदी नाटक और रंगमंच. वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. चतुर्वेदी, रमाकांत (2008). सुरेंद्र वर्मारू नाट्य–संसार. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. जोशी, प्रकाश (2010). हिंदी रंगमंच की परंपरा और वर्तमान. साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली।
11. त्रिपाठी, विजयदत्त (2012). नाट्य–समीक्षा के आयाम. राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली।
12. दीक्षित, शैलेश (2015). सुरेंद्र वर्मा के नाटकों में स्त्री–विमर्श. हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयागराज।
13. नाथ, राजेंद्र (2004). समकालीन नाट्य–लेखन. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली।
14. पांडे, उदयभानु (2009). हिंदी नाट्य–साहित्य का समकालीन संदर्भ. किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली।
15. बांठिया, सुमन (2011). रंगमंच की भाषा और हिंदी नाटक. वाग्देवी प्रकाशन, बीकानेर।
16. भारती, धर्मवीर (1971). अंधा युग. भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली।
17. राकेश, मोहन (1958). आषाढ़ का एक दिन. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
18. शर्मा, जगदीश (2014). सुरेंद्र वर्मा: जीवन और नाट्य–सर्जना. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
19. शर्मा, रमेशचंद्र (2006). आधुनिक हिंदी नाटक. राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
20. श्रीवास्तव, रामकृष्ण (2018). हिंदी नाटकरू रंगमंचीय अनुशीलन. साहित्य भंडार, इलाहाबाद।
21. 'हिंदी नाटक की रंगमंचीयता'. रंग–प्रसंग (2007). राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, नई दिल्ली, अंक 32, पृष्ठ 45–63।
22. 'सुरेंद्र वर्मा और उनके नाटकों की समीक्षा'. समकालीन भारतीय साहित्य (2010). साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, अंक 142, पृष्ठ 78–90।
23. 'हिंदी रंगमंच का समकालीन परिदृश्य'. नाट्य–शास्त्र शोध–पत्रिका (2016). भोपाल, वर्ष 8, अंक 2, पृष्ठ 22–38।
24. धारवाड़कर, अपर्णा भार्गव (2005). थिएटर्स ऑफ़ इंडिपेंडेंस: ड्रामा, थ्योरी, एंड अर्बन परफॉर्मेंस इन इंडिया सिंस 1947. यूनिवर्सिटी ऑफ़ आयोवा प्रेस, आयोवा सिटी.
25. रिचमंड, फ़ार्ले, आदि (1990). इंडियन थिएटर: ट्रेडिशंस ऑफ़ परफॉर्मेंस. यूनिवर्सिटी ऑफ़ हवाई प्रेस, होनोलूलू.